❶
ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अग्ने रक्षाणो अंहसः। सामवेद 24

हे प्रकाश स्वरूप प्रमात्मन्! आप पाप से हमारी रक्षा करो।

O The luminous Lord ! protect us from sins and evil deeds, save us from distress.

वर्ष 42, अंक 7 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 31 दिसम्बर, 2018 से रविवार 6 जनवरी, 2019
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार जरुरी क्यों?

विश्व पुस्तक मेला, प्रगति मैदान : 5 से 13 जनवरी, 2019 : आओ साहित्य प्रचार में सहयोगी बनें!

क्या आप नये साल में कुछ नये संकल्प लेने की तलाश कर रहे है, तो सभी अच्छे संकल्पों के बीच एक संकल्प और ले सकते हैं। वह संकल्प जो आज से सैंकड़ों वर्ष पहले महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने राष्ट्र और धर्म की रक्षा के लिए लिया था। वह संकल्प जिसे बाद में स्वामी श्रद्धानंद, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, वीर अशफाक उल्ला, श्यामजी कृष्णवर्मा, लाला लाजपतराय, भाई परमानंद, वीर सावरकर पंडित लेखराम न जाने और कितनी महान विभूतियों ने धारण कर इस राष्ट्र और मानव जाति की रक्षा की।

कुछ लोग सोच रहे होंगे कि आज तो देश स्वतंत्र और हम शक्ति सम्पन्न है अब ऐसे संकल्पों की क्या जरूरत है तो उन्हें यह भी पता होगा आज भले ही बाहरी शत्रुओं को हम रोकने में सक्षम हों, किन्तु अंदर ही अंदर कुसंस्कारों की दीमक धीरे-धीरे हमारी आने वाली नस्ल को चट कर रही हैं। इसे बचाने के लिए हमें इस संकल्प की अत्यंत जरुरत हैं और वह जरूरत हर घर में सत्यार्थ प्रकाश से बेहतर क्या हो सकती है।

क्योंकि केवल कुसंस्कार ही नहीं

.... केवल कुसंस्कार ही नहीं आज हमारी नई पीढ़ी के ऊपर भाषाई, मजहबी, पश्चिमी संस्कृति से लेकर अन्य पंथों के लोग हमारे युवक-युवतियों को बरगलाने का कार्य कर रहे हैं। प्रेमजाल, भ्रमजाल, अंधविश्वास का जाल या फिर सिनेमा के माध्यम से विचारों का ऐसा जाल फेंक रहे हैं कि जिसमें हमारा युवा उलझता जा रहा हैं। विडम्बना देखिये! इस बात का पता सबको है लेकिन अधिकांश तो ये सोचकर संतोष व्यक्त कर रहे कि हमारे बच्चें अभी सही हैं.....

आज हमारी नई पीढ़ी के ऊपर भाषाई, मजहबी, पश्चिमी संस्कृति से लेकर अन्य पंथों के लोग हमारे युवक-युवतियों को बरगलाने का कार्य कर रहे हैं। प्रेमजाल, भ्रमजाल, अंधविश्वास का जाल या फिर सिनेमा के माध्यम से विचारों का ऐसा जाल फेंक रहे हैं कि जिसमें हमारा युवा उलझता जा रहा हैं। विडम्बना देखिये! इस बात का पता सबको है लेकिन अधिकांश तो ये सोचकर संतोष व्यक्त कर रहे कि हमारे बच्चें अभी सही हैं किन्तु अनेकों इस संतोष में रहते-रहते अपनी औलादों को अपने हाथों से खो भी चुके हैं।

ये एक ऐसी त्रासदी है जिसका हर रोज कोई न कोई एक शिकार हो रहा है। आर्य समाज इस सामाजिक, धार्मिक त्रासदी से भविष्य में पड़ने वाले प्रभाव को समझ रहा है। इससे बचाने के लिए ही आर्य समाज प्रतिवर्ष विश्व पुस्तक मेले में जाकर युवाओं को 50 रूपये की कीमत का सत्यार्थ प्रकाश 10 रूपये में उपलब्ध कराता है। वह सत्यार्थ प्रकाश जिसने भारत से अंधविश्वास, सती प्रथा को खत्म किया जिसनें नारी शिक्षा पर जोर दिया, विधवा विवाह शुरू कर उन्हें नया जीवन दिया। यदि सत्यार्थ प्रकाश न होता तो क्या देश में एक विधवा नारी इंदिरा गाँधी देश की प्रधानमंत्री बन पाती? ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ें खोखली कर देने वाले इस अमर ग्रन्थ ने इस देश को संजीवनी दी।

आज एक बार फिर देश उसी माहौल में जाता दिख रहा हैं। वर्तमान की चकाचौंध दिखाकर नई पीढ़ी को भ्रष्ट करने की कोशिश जारी है, उन्हें पुराणों के गपोड़े सुनाकर कहा जा रहा है कि तुम्हारा धर्म तो झूठ और अवैज्ञानिक है।

- *शेष पृष्ठ 6 पर*

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची

1. आर्यसमाज हनुमान रोड	21000	4. श्री पदम्चन्द आर्य जी	1000
2. आर्यसमाज पंखा रोड जनकपुरी	11000		- क्रमशः
3. श्री सोमदेव मल्होत्रा जी	1000		

100 सत्यार्थ प्रकाश 10-10 रुपये में वितरित करने के लिए 2000/- रुपये सहयोग राशि की आवश्यकता है। अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अपने परिवार, आर्यसमाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। - *महामन्त्री*

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला, प्रगति मैदान : 5 जनवरी से 13 जनवरी, 2019

आओ! "सत्यार्थ प्रकाश" प्रचार-प्रसार यज्ञ में अपनी आहुति दें

आपकी एक आहुति कर सकती है किसी का जीवन परिवर्तन

स्टाल उद्घाटन
5 जनवरी, 2019
प्रातः 11:30 बजे

हिन्दी : हॉल नं. 12
स्टाल : 222-231

बाल साहित्य
हॉल नं. 7डी स्टाल : 188

मेला समापन
13 जनवरी, 2019
रात्रि 8 बजे

सत्यार्थ प्रकाश अल्प मूल्य केवल मात्र 10/- रुपये में देने के लिए अपनी ओर से आर्थिक सहयोग प्रदान करें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश जोकि 50/- रुपये का है, सभा को 30/- रुपये में प्राप्त होता है। आप द्वारा प्रदान की गई 20/- सब्सिडी (छूट) से इस अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर मात्र 10 रुपये में उपलब्ध कराया जाता है। अतः आप सभी दानी महानुभावों एवं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि अधिकाधिक प्रतियां 10/- में उपलब्ध कराने हेतु अधिकाधिक छूट सहयोग प्रदान करें। आप अपना सहयोग सभा कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर में नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट/मनिआर्डर के माध्यम से भेज सकते हैं तथा सभा के निम्नांकित बैंक खाते में सीधे भी जमा करा सकते हैं। कृपया अपनी सहयोग राशि का चैक 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम बनाएं।

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 0133002100005251 पंजाब नेशनल बैंक, IFSC - PUNB0013300 MICR - 110024092

कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त **श्री मनोज नेगी जी मो. 9540040388** को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लिप व्हाट्सएप्प करें या aryasabha@yahoo.com पर भेजकर राशि की रसीद मंगा लेवें। समस्त सहयोगी महानुभावों की सूची आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित की जाएगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है।

स्टाल पर समय दान करने वाले सहयोगी कार्यकर्त्ता अपने नाम श्री सुखबीर सिंह आर्य (9350502175, 9540012175) को नोट कराएं।

वेद-स्वाध्याय

अंधकारमय अवस्था से परमज्योति-प्राप्ति

उद्वयं तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।। - अथर्व. 7/ 5/53
ऋषिः प्रस्कण्वः काण्वः।। देवता - **सूर्यः।।** छन्दः **निचृदनुष्टुप्।।**

शब्दार्थ- वयम्=हम **तमसः परि**= अन्धकार से ऊपर **उत्**=ऊँचे उठकर **उत्तरं ज्योतिः**=अधिक उच्च, उच्चतर, प्रकाश को **पश्यन्तः**=देखते हुए उस **देवत्रा देवम्**=सब देवों के देव, सब प्रकाशों के प्रकाशक **सूर्य**= सर्वप्रेरक, महासूर्य को **उत्तमं ज्योतिः**= उस सबसे उत्तम, उच्चतम ज्योति को **अगन्म**= प्राप्त करें।

विनय - हमें ऊपर-ऊपर, अधिक-अधिक प्रकाश में उठना है। इस अन्धकार मय अवस्था से निकल परम ज्योति तक पहुँचना है। हमें अपनी यह वर्त्तमान अवस्था अन्धकारमय इसलिए प्रतीत नहीं होती चूँकि हमें उसके अतिरिक्त अभी और किसी प्रकाश का पता ही नहीं है। यदि हमें इससे अगला ही प्रकाश दीखने लगे तो कम-से-कम इस वर्त्तमान अँधेरी दशा से बाहर निकलने को हमारा जी अवश्य छटपटाने लगे। हाँ, उस अन्तिम ज्योति तक बेशक हम धीरे-धीरे ही पहुँचेंगे। एकदम उस परमज्योति को तो हमारी आँख सह नहीं सकेगी, अभी उस चकाचौंध करने वाले महाप्रकाश के दृष्टिगोचर हो जाने पर तो शायद हमारी अनभ्यस्त निर्बल दृष्टि अन्धी हो जाए या हम पगला जाएँ, अतः हमें क्रमशः एक के बाद एक उच्चतर प्रकाश को देखते हुए ऊपर जाना होगा। हम इस तामसिक दशा को छोड़ राजसिक अवस्थाओं से गुजरते हुए सत्त्व के प्रकाश में पहुँचेंगे। इस जड़वाद (नास्तिकता) और भोगवाद के अन्धकार से उठ देववाद और यज्ञवाद के विविध प्रकाशों को देखते हुए उस सर्वोच्च प्रकाश में जा पहुँचेंगे जहाँ एकेश्वर वाद और सर्वोदयवाद का अखण्ड राज्य है। जड़ता, स्थूलता के पार्थिव अन्धकार से उठकर सूर्य-किरणों से प्रकाशित सूक्ष्मतर विस्तृत अन्तरिक्ष की सैर करते हुए उस सूर्य ही को पा लेंगे जिसकी कि ज्योतिर्मय किरणों से अन्य सब लोक प्रकाश पा रहे हैं। हे प्रभो! हम पर ऐसी कृपा करो कि हम इस अन्धकार मय प्रकृतिग्रस्त अवस्था से उठकर नाना देवों को दिखलाने वाली अपनी आत्मिक ज्योति को विविध प्रकार से देखते हुए अन्त में तुम्हारी उस परमात्म-ज्योति को पा लेवें, जिसमें कि तुम सब देवों के देव और सब ब्रह्माण्ड के प्रेरक महान् सूर्य होकर अपने अनन्त अपार अखण्ड प्रकाश में सदैव जगमगा रहे हो, सदैव देदीप्यमान हो रहे हो।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

दलित, मन्दिर और भगवान : बस एक समाधान

आखिर इन्सान को जातियों में बांटकर उनके साथ भेदभाव कर रहे पुजारीगण उस भगवान को कैसे मुंह दिखाते होंगे जिसने इन्सान को बनाने में कोई भेद नहीं किया। .... इन लोगों के धार्मिक ज्ञान की सीमा कितनी है, इनकी सोच का दायरा कितना बड़ा है, ये लोग धर्म को कितनी गति देने की इच्छा रखतें है किन्तु इतना जरुर पता है कि ऐसे कथित धर्माचार्यों को अपने इतिहास का ज्ञान जरुर न्यून है। यदि एक भी दिन ये लोग अपना इतिहास उठाकर पढ़ लेंगें तो शायद जान पाएंगे कि इस जातिवाद और छुआछूत के कारण ही हम अफगानिस्तान से सिमटते-सिमटते दिल्ली तक रह गये।.....

जिस देश में भगवान की जातियों को लेकर राजनीतिक हलकों में खींचतान जारी हो वहां एकाएक इन्सान की जाति से संबधित कोई खबर आ जाये तो इसमें हैरत में पड़ने की कोई बड़ी बात नहीं हैं। अब एक खबर है कि देश के कुछ प्रतिष्ठित मन्दिरों में आज भी दलितों से भेदभाव जारी है। कहा जा रहा है, भक्तों की जाति से जुड़ी शुद्धता और अपवित्रता की पुरातन पंथी सोच अभी भी देश के कुछ प्रमुख मन्दिरों में अंदर तक घर की हुई है, जहां देवी-देवताओं की पवित्रता को बचाए रखने के लिए दलितों का प्रवेश वर्जित है। इनमें एक मन्दिर आस्था की नगरी वाराणसी का काल भैरव मन्दिर है, यहां दलितों को भगवान के छूने पर रोक है। दूसरा ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर में 11वीं सदी के प्रतिष्ठित लिंगराज मन्दिर में भी दलित भक्त ऐसी ही पाबंदियों का सामना कर रहे हैं। तीसरा उत्तराखंड में जागेश्वर मन्दिर, शिव के इस मन्दिर में भी दलितों का प्रवेश वर्जित है। इसके बाद ऐसे ही एक दो मन्दिर और भी हैं, जहाँ दलितों के प्रवेश पर रोक मानी जा रही है।

अक्सर ऐसी खबरें हमें निराशा प्रदान करती हैं ऐसे मन्दिरों के कथित ठेकेदारों की बीमार सोच पर तरस खाने के साथ-साथ 21 वीं सदी में ऐसे भेदभाव मन में दुःख भी पैदा करता है, हालाँकि इसी बीच कुछ स्वस्थ खबरें भी आती रहती हैं जैसे इसी वर्ष केरल में सदियों पुरानी परंपरा को तोड़ते हुए छह दलितों को आधिकारिक तौर पर त्रावणकोर देवस्वम बोर्ड का पुजारी नियुक्त किया गया है। वैसे तो मन्दिरों में ब्राह्मणों को ही पुजारी बनाने की परंपरा रही है, लेकिन यह पहला मौका था जब दलित समुदाय के लोगों को पुजारी बनाया गया है।

परन्तु यह कोई तुलना का सवाल नहीं कि आखिर इन्सान को जातियों में बांटकर उनके साथ भेदभाव कर रहे पुजारीगण उस भगवान को कैसे मुंह दिखाते होंगे जिसने इन्सान को बनाने में कोई भेद नहीं किया। यह सही है कि देश में किसी भी मन्दिर में दलितों के प्रवेश पर घोषित तौर पर कोई पाबंदी नहीं है, लेकिन रह-रहकर दलितों के मन्दिर प्रवेश पर आपत्तियां उठती भी रहती हैं, ऐसी खबरें भी आती रहती है, ये आपत्तियां कभी परंपरा के नाम पर सामने आती हैं, तो कभी मान्यताओं के नाम पर। जहाँ ऐसी कथित परंपराओं-मान्यताओं को खत्म करने में धर्माचार्यों की विशेष भूमिका होनी चाहिए थी, लेकिन उनमें से बहुत कम ऐसे रहे, जो सामाजिक समरसता के लिए सक्रिय हुए, अब तो आम हिंदू के लिए यह जानना मुश्किल है कि आखिर ये बड़े-बड़े धर्माचार्य करते क्या हैं?

मुझे नहीं पता इन लोगों के धार्मिक ज्ञान की सीमा कितनी है, इनकी सोच का दायरा कितना बड़ा है, ये लोग धर्म को कितनी गति देने की इच्छा रखतें है किन्तु इतना जरुर पता है कि ऐसे कथित धर्माचार्यों को अपने इतिहास का ज्ञान जरुर न्यून है। यदि एक भी दिन ये लोग अपना इतिहास उठाकर पढ़ लेंगें तो शायद जान पाएंगे कि इस जातिवाद और छुआछूत के कारण ही हम अफगानिस्तान से सिमटते-सिमटते दिल्ली तक रह गये। इस सब के बाद भी हम नहीं समझ रहे हैं। आज भी देश के कोने-कोने से आ रही धर्मान्तरण की खबरों के बीच जहाँ धर्माचार्यों, शंकराचार्यों, पुजारियों, महंतों को हिंदू समाज को दिशा दिखानी चाहिए, लेकिन लगता है कि खुद उन्हें दिशा दिखाने की जरूरत है। क्योंकि घटनाओं या खबरों पर ये लोग मौन रहकर अपनी मूक स्वीकृति सी प्रदान जो कर रहे हैं?

2016 की वो खबर सबको याद होगी जब उत्तराखण्ड के चकराता के पोखरी गांव के शिल्गुर देवता मन्दिर में दलितों को मन्दिर में प्रवेश दिलाने गए सांसद को ही लोगों ने पीट दिया था, तो सोचिए, साधारण आदमियों की क्या दशा होगी। बात सिर्फ दलित मन्दिर प्रवेश के अधिकार की नहीं है ये अधिकार तो हमारा कानून भी हमें देता है। बात है सामाजिक चेतना की, अपने इतिहास से सीखने की और इसमें ज्यादा पन्ने पलटने की भी जरूरत नहीं। स्वामी श्रद्धानन्द के विचारों को उनके द्वारा लिखित पुस्तकों को पढ़ने से ही ज्ञात हो जायेगा कि अतीत के कालखंड में हमने जातिवाद के कारण धार्मिक रूप से कितना नुकसान उठाया है। किस तरह स्वामी श्रद्धानन्द ने मन के कपाट खोलकर समरसता का दीप जलाया था।

आज एक ओर तो हिंदू समाज के धर्माचार्य दलितों के धर्मान्तरण पर चिंता जताते दिखते हैं। दूसरी ओर वे ऐसी अप्रिय घटनाओं की अनदेखी करते हैं। जबकि हिंदुओं के बड़े धर्माचार्यों को स्वयं सामने आकर यह दिवार गिरानी होगी, एक वैचारिक आधुनिकता लानी होगी, इसके आये बिना तो इस समस्या का निर्णायक हल होने से रहा। जब वो स्वयं सामने आयेंगे तब अंध परम्पराओं और झूठी मान्यताओं के नाम पर इस दीवार को सजाने वाले छोटे-मोटे पुजारी खुद पीछे हट जायेंगे। इस समस्या में सबसे पहला समाधान मन में प्रवेश करने से आरम्भ करना होगा, मन्दिर में प्रवेश तो स्वयं अपने आप हो जायेगा वरना इस तरह की खबरें बनती रहेगी और पढ़कर दुःख व्यक्त होते रहेंगे।

- सम्पादक

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018
कूपनों पर एकत्र की गई राशि यथाशीघ्र भेजें

आप सभी के सहयोग सदभाव के साथ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली का आयोजन सफलता के साथ 25 से 28 अक्तूबर तक स्वर्ण जन्यन्ती पार्क, रोहिणी में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के विशाल कार्य पर बहुत अधिक राशि का व्यय हुआ है। अतः सभी दानदाताओं एवं दान एकत्र करने करने वाले आर्य महानुभावों/आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे अपनी दान राशि तथा कूपनों पर एकत्र की गई दान राशियां कूपन सहित शीघ्रतिशीघ्र सभा कार्यालय में भेज देवें। इसी के साथ जो सज्जन महासम्मेलन में अपनी आहुति अभी तक न दे सकें तो उनसे भी निवेदन है कि वे भी अपनी आहुति आवश्य ही भेजें। आप अपनी दान राशि एवं कूपनों पर एकत्र सहयोग राशि सीधे सम्मेलन बैंक खाते में भी नकद/चैक द्वारा जमा करा सकते हैं। कृपया अपनी सहयोग राशि/एकत्र की गई राशि का चैक **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन- 2018'** के नाम बनाएं। कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त श्री मनोज नेगी जी (9540040388) को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लीप की फोटो व्हाट्सएप्प करें अथवा अपने नाम पते के साथ aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें, ताकि आपको राशि की रसीद भेजी जा सके। बैंक खाते का विवरण इस प्रकार है -

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन- 2018'
A/c No. 918010068587610 IFSC Code : UTIB0002193
Axis Bank, Cannought Place, New Delhi

तो अगली संजलि कौन होगी?

संजलि वह लड़की है जिसे 18 दिसम्बर को आगरा के पास मलपुरा मार्ग पर जिंदा आग के हवाले कर दिया गया। यह वाकया भरी दोपहर में हुआ जब संजलि स्कूल की छुट्टी के बाद साइकिल से घर लौट रही थीं उसी समय कुछ लोगों ने उस पर हमला कर उसे आग के हवाले कर दिया। आज संजली हमारे बीच नहीं है, वह एक दु:खद घटना का हिस्सा बन चुकी है, कुछ दिन बाद उसकी हत्या की फाइल अदालत में जा चुकी होगी, जहाँ वकील होंगे, गवाह होंगे। उनके बीच बहस होगी, हत्यारों को ढूंढा जायेगा। किन्तु उस कारण को खोजने की कोशिश कोई नहीं करेगा जिस कारण आये दिन कोई न कोई संजली मौत का निवाला बनकर अखबारों की खबर बनती है।

संजली का हत्यारा कोई और नहीं बल्कि खुद उसके ताऊ का बेटा योगेश था। यानि उसका भाई जिसने संजली की मौत की अगली ही सुबह जहर खाकर आत्महत्या कर ली। कहा जा रहा है – वह संजलि की ओर आकर्षित था और उसके इनकार करने की वजह से उसने ये कदम उठाया। पुलिस ने हत्या के इस मामले में योगेश के अलावा उसके ममेरे भाई आकाश और योगेश के ही एक और रिश्तेदार विजय को गिरफ्तार किया है।

कुछ सालों पहले तक ऐसी घटनाएँ अखबारों के पन्नों के साथ दम तोड़ दिया करती थी। विरला ही कोई खबर दोबारा रद्दी अखबार के बने लिफाफों पर दिख जाये वरना कुछेक लोगों के जेहन को छोड़कर कहीं नहीं दिखती थी। पर अब ऐसा नहीं है

..... इसमें कोई दो राय नहीं है कि यदि पर्दे पर देश-विदेश के मनोहारी दृश्य, हैरत अंगेज कार्य, रोमांस का वातावरण देखकर सभी व्यक्ति पुलकित और आनन्दित हो उठते हैं तो अश्लीलता, हिंसा देखते वक्त कोई प्रभाव नहीं पड़ता हो? असल में ऐसे दृश्यों का ही किशोर मन पर बड़ा बुरा प्रभाव पडता है, वे छोटी उम्र से ही अपने आवेगों पर से नियंत्रण खो बैठते हैं। नतीजा ये भी होता है पर्दे पर देखा गया प्रेम किशोरों को इस कद्र प्रभावित करता है कि स्कूल जैसी संस्थाओं में कुछ किशोर और किशोरियां अपने प्यार के किस्से को बढ़ा-चढ़ाकर सुनाते है। ऐसे में उनके प्यार की प्रतिस्पर्धा होती भी देखी गई है। जो किशोर कुछ समय पहले स्कूल के विषयों पर चर्चा करता था वह आज प्यार, जुदाई बदला और बेवफाई जैसी बातें कर रहा हैं।.....

देखने के लिए कुछ बच्चों पर प्रयोग किए। इन सबकी उम्र 14 से 17 साल के बीच थी। इन बच्चों को 60 फिल्मों में से चुने गए हिंसक दृश्यों के चार-चार सेकेंड के क्लिप दिखाए गए। इन विडियो को देखने के दौरान एमआरआई के जरिये उनकी दिमागी हरकतों की जानकारी जुटाई जा रही थी। बच्चों की उंगलियों में सेंसर भी लगाए गए थे जो उनकी त्वचा में हो रही संवेदनाओं की जानकारी हासिल कर रहे थे। प्रयोग के बाद जो नतीजे मिले हिंसा वाले दृश्यों को देखने के दौरान समय बीतने के साथ बच्चों के दिमाग की सक्रियता कम होती चली गई। ये कमी दिमाग के उस हिस्से में हुई जो भावनाओं को नियंत्रित करता है और उन पर प्रतिक्रिया जताता है।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि यदि पर्दे पर देश-विदेश के मनोहारी दृश्य, हैरत अंगेज कार्य, रोमांस का वातावरण देखकर सभी व्यक्ति पुलकित और आनन्दित हो उठते हैं तो अश्लीलता, हिंसा देखते वक्त कोई प्रभाव नहीं पड़ता हो? असल में ऐसे दृश्यों का ही किशोर मन पर बड़ा बुरा प्रभाव पडता है, वे छोटी उम्र से ही अपने आवेगों पर से नियंत्रण खो बैठते है। नतीजा ये भी होता है पर्दे पर देखा गया प्रेम किशोरों को इस कद्र प्रभावित करता है कि स्कूल जैसी संस्थाओं में कुछ किशोर और किशोरियां अपने प्यार के किस्से को बढ़ा-चढ़ाकर सुनाते है। ऐसे में उनके प्यार की प्रतिस्पर्धा होती भी देखी गई है। जो किशोर कुछ समय पहले स्कूल के विषयों पर चर्चा करता था वह आज प्यार, जुदाई बदला और बेवफाई जैसी बातें कर रहा हैं।

मीडिया भी किशोर और किशोरियों को इस राह पर पहुंचाने के लिए काफी हद तक उत्तरदायी है। विभिन्न चैनल समूहों पर शिक्षा की अपेक्षा प्रेम, बेवफाई उसमें नायक-नायिकाओं से बदले की भावना जैसी चीजों पर अधिक बल दिया जा रहा है, इनमें उत्तेजक दृश्यों की भरमार रहती है। उत्तेजक दृश्यों से उत्पन्न वासना भी इन्हें गुमराह कर रही है। यही कारण है कि दिमाग से कुंद संजली के हत्यारे योगेश ने वही किया जो एक नायक पर्दे पर दूर जाती नायिका को देखकर कहता है कि काजल यदि तुम मेरी नहीं हो सकती तो मैं तुम्हें किसी और की नहीं होने दूंगा।

संजली की घटना कोई अंतिम घटना नहीं है, बल्कि अभी अगली किसी और ऐसी ही घटना का इंतजार कीजिए, क्योंकि किशोरों के मन पर फिल्मों, सीरियलों का बढ़ता प्रभाव योगेश जैसे न जाने कितने लोगों के दिमाग में घर किये बैठा है। यदि हम अब भी नहीं संभले तो संजली आखिरी लड़की नहीं है जिसे जिन्दा जलाया गया और न उसका हत्यारा योगेश आखिरी दरिंदा है जो ऐसे कदम उठाएगा। घटनायें होती रहेंगी, खबरें छपती रहेंगी लोग पढ़कर दु:ख और अफसोस मनाते रहेंगे।

– ***राजीव चौधरी***

क्रान्तिकारियों की कथा

आजाद के अन्तिम दर्शन

गतांक से आगे –

अचानक नॉटबावर वहां पहुंचा और कार से उतरते-उतरते आज़ाद को देखते ही गोली दाग दी। गोली निशाने पर लगी और उनकी दाहिनी जांघ को चीरती हुई हड्डी तोड़कर निकल गयी। (.455 बोर की गोली थी, जिससे अच्छे-अच्छे जानवर भी क्षण-भर में बिलट जाते हैं। आदमी की तो बिसात ही क्या!)

आज़ाद को पूरी स्थिति भांपते देर न लगी। उन्होंने सुखदेवराज को शीघ्र ही वहां से खिसक जाने का संकेत किया। (शायद, स्वयं भी घेरे से निकल भागने में कामयाब हो जाते, यदि नॉटबावर की पहली गोली से उनकी जांघ की हड्डी न टूट गयी होती) पलक मारते ही सदरी की जेब से माउज़र निकालने के लिए हाथ डाला-भर था कि 'समय हाउस' की झाड़ी के पीछे छिपे हुए विश्वेश्वर सिंह ने दूसरी गोली दाग दी, जो उनकी दाहिनी बांह को चीरती हुई फेफडे में घुस गयी।

इसी बीच आज़ाद की पहली गोली नॉटबावर की मोटर के टायर में घुसी। दाहिना हाथ ज़ख़्मी होते ही माउज़र बायें हाथ में ले लिया और उनकी दूसरी गोली ने नॉटबावर की कलाइ तोड़ दी। हाथ से छूटकर उसका रिवाल्वर ज़मीन पर जा गिरा। इस अन्देशे से कि कहीं मोटर में बैठकर वह भाग न जाये आज़ाद का माउज़र फिर गरजा और गाड़ी के इंजिन पर दनादन गोलियां बरसने लगीं।

जान बचाने की ग़रज़ के नॉटबावर पास ही जामुन के पेड़ के पीछे जा छिपा। तब तक लेटे ही लेटे आज़ाद 10 राउण्ड फायर कर चुके थे। पहली मेगज़ीन खाली हुई। उनका दाहिना हाथ तो पहले ही बेकार हो चुका था, बायें हाथ से दूसरी मैंगज़ीन लोड की और गरजे, ''अरे ओ! ब्रिटिश साम्राज्य के बुज़दिल प्रतिनिधि! मर्द की तरह सामने क्यों नहीं आता! भारतीय क्रांतिकारी के सामने गीदड़ की तरह पेड़ की आड़ लिए क्यों दुबका खड़ा है!''

तब तक मैज़र्स का आदेश पाते ही टिटर्टन और हैरिस आर्म्ड पुलिस के अपने-अपने दस्तों को 'नीलिंग लोड' पोज़ीशन लेने का हुक्म दे चुके थे। 40 जवानों ने घुटनों के बल बैठकर अपने-अपने मस्कटों में पहली गोली डाली। आज़ाद की ओर निशानाा साधा और दूसरे हुक्म का इन्तजार करने लगे।

'फायर' कहकर मैज़र्स दहाड़ा। एक साथ 40 गोलियां दर्गीं। इस समय घायल आजाद रेगते हुए उस जामुन के पेड़ की ओर बढ़ रहे थे, जिसके पीछे नॉटबावर छिपा था।

– ***क्रमश:***

– ***धर्मेन्द्र गौड़ : साभार :***

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

जब से सोशल मीडिया आया इन्सान चले जाते हैं लेकिन घटनाएँ जीवित रहती है, घटनाओं में धर्म और जाति तलाश की जाती है उन पर राजनीति होती है। संजलि की हत्या को भी यही जातीय रंग देने की कोशिश जारी है, ताकि सच का गला झूठ के पंजों से दबाया जा सके।

आखिर क्या कारण रहा कि अस्सी के दशक से पहले रिश्ते कुछ और थे, किन्तु इस दशक के बाद रिश्तों के पैर फिसलने शुरू हुए और फिसलते-फिसलते यहाँ तक आ पहुंचे कि रिश्तों की सारी मर्यादा को किशोर युवक-युवतियां तार-तार कर बैठे। यदि हम अब भी संभलना चाहते हैं तो हमें सच को सुनना होगा, उसका अनुसरण करना होगा क्योंकि रिसर्च करने वालों का मानना है कि टीवी, मोबाइल की स्क्रीन पर दिखाई गई हिंसा, प्रेम के दृश्य किशोरों के दिमाग पर बुरा असर डालकर उन्हें संवेदनहीन बना रहे हैं। दिमाग का वो हिस्सा जो भावनाओं को नियंत्रित करता है और बाहरी घटनाओं पर प्रतिक्रिया जताता है, रिश्तों-नातों की गरिमा को समझना सिखाता है, जो बचपन के दौर में विकसित होता है वो हिस्सा हिंसक दृश्यों के देखने के कारण लगातार कुंद होता जा रहा है। यानि जो कुछ स्क्रीन पर घट रहा है, वह दिमाग में घर कर रहा है जिसकी चपेट में युवा और किशोर आ रहा है।

कुछ समय पहले अमेरिका की नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यरोलॉजिकल डिसॉर्डर एंड स्ट्रोक ने अपनी एक टीम के साथ फिल्मों के हिंसक दृश्यों का असर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : 25-28 अक्तूबर, 2018 दिल्ली

विभिन्न समितियों के कार्यकर्ताओं का स्वागत एवं सम्मान समारोह सम्पन्न

पंजीकरण समिति का सम्मान

धन संग्रह समितिका सम्मान

परिवहन समिति का सम्मान

भोजन समिति के अधिकारियों, सदस्यों का सम्मान

स्मारिका प्रकाशन समिति का सम्मान

यज्ञशाला एवं यज्ञ समिति का सम्मान

पुरोहित/धर्माचार्य समिति का सम्मान

अमानती समान (क्लॉक रूम) समिति का सम्मान

प्रदर्शन समिति का सम्मान

आर्य वीर दल समिति का सम्मान

श्री प्रवीन तायल जी को आर्य गौरव सम्मान

महापौर श्री आदेश कुमार गुप्ता जी के आर्य गौरव

श्री प्रकाश शर्मा जी को आर्य गौरव सम्मान

श्रीमती मृदुला एवं श्री आनन्द कुमार चौहान जी को आर्य गौरव सम्मान

महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी को उन्हीं के फोटो स्मृति रूप में भेंट करके सम्मान किया गया।

मैदान साज-सज्जा समिति के सदस्यों का सम्मान एवं स्वागत।

साउण्ड एंड माइक समिति का सम्मान

आवास व्यवस्था समिति के सदस्यों के सदस्यों का सम्मान

विशेष नोट : उपरोक्त प्रकाशित चित्र अन्तिम नहीं हैं। महासम्मेलन से सम्बन्धित चित्र आर्यसन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किए जाएंगे। - सम्पादक

ओ३म्

आर्य एवं राष्ट्रीय पर्वों की सूची : विक्रमी सम्वत् 2075-76 तद्नुसार सन् 2019

क्र. सं.		पर्व का नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	दिन
1.		लोहड़ी	पौष शुक्ल, 7 वि. 2075	13/01/2019	रविवार
2.		मकर-संक्रान्ति	पौष शुल्क, 8 वि. 2075	14/01/2019	सोमवार
3.		गणतन्त्र दिवस	माघ कृष्णा, 6 वि. 2075	26/01/2019	शनिवार
4.		वसन्त-पंचमी	माघ शुक्ल, 5 वि. 2075	10/02/2019	रविवार
5.		सीताष्टमी	फाल्गुन कृष्ण, 8 वि. 2075	26/02/2019	मंगलवार
6.	ऋषि-पर्व	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	फाल्गुन कृष्ण,10 वि.2075	01/03/2019	शुक्रवार
7.	ज्योति-पर्व	शिवरात्रि (ऋषि बोधोत्सव)	फाल्गुन कृष्ण, 13 वि.2075	04/03/2019	सोमवार
8.	वीर-पर्व	पं.लेखराम बलिदान दिवस (वीर तृतीया)	फाल्गुन शुक्ल, 3 वि. 2075	09/03/2019	गुरुवार
9.	मिलन-पर्व	नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन पूर्णिमा, वि. 2075	20/03/2019	बुधवार
10.		आर्य समाज स्थापना दिवस/ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/नवसम्वत्सर/ उगाड़ी/गुड़ी पड़वा/ चैती चांद	चैत्र शुल्क, 1 वि.2076	06/04/2019	शनिवार
11.		रामनवमी	चैत्र शुक्ल, 9 वि. 2076	13/04/2019	शनिवार
12.		वैशाखी	चैत्र शुक्ल, 10 वि. 2076	14/04/2019	रविवार
13		पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस	बैशाख कृष्ण, 7 वि.2076	26/04/2019	शुक्रवार
14.		हरितृतीया(हरियाली तीज)	श्रावण शुक्ल, 3 वि.2076	03/08/2019	शनिवार
15		स्वतन्त्रता दिवस	श्रावण पूर्णिमा, वि. 2076	15/08/2019	गुरुवार
16.	वेद-प्रचार समारोह	श्रावणी उपाकर्म-रक्षा बन्धन/ हैदराबाद सत्याग्रह दिवस	श्रावण पूर्णिमा, वि. 2076 श्रावण पूर्णिमा, वि. 2076	15/08/2019	गुरुवार
17		श्री कृष्णजन्माष्टमी	भाद्रपद कृष्ण, 8 वि. 2076	24/08/2019	शनिवार
18.		गांधी जयन्ती/लाल बहादुर शास्त्री जयन्ती	अश्विन शुक्ल, 4 वि. 2076	02/10/2019	बुधवार
19.		विजय दशमी/दशहरा	आश्विन शुक्ल, 10 वि.2076	08/10/2019	मंगलवार
20.		स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन शुक्ल, 12, वि. 2076	10/10/2019	गुरुवार
21.	क्षमा-पर्व	दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)	कार्तिक अमावस्या, वि. 2076	27/10/2019	रविवार
22.	बलिदान-पर्व	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष कृष्ण, 12, वि. 2076	23/12/2019	सोमवार

नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

- विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को कम्बल वितरण : आर्यसमाज कीर्ति नगर द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए कम्बल वितरण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 30 दिसम्बर, 2018 को किया गया। इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी भी पहुंचे। कार्यक्रम में लगभग 200 निर्धन परिवारकों को कम्बलों का वितरण किया गया। महाशय धर्मपाल जी ने अपने हाथों से कम्बल वितरण करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। तदुरान्त आर्यमाज के प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य, मन्त्री श्री सतीश चड्डा एवं अन्य अधिकारियों से सहयोग किया गया।

Veda Prarthana - II
Regveda - 23/2

O! Learned Teachers, Help Me Obtain Virtuous Knowledge and Sharp Intellect

- Acharya Gyaneshwarya

Continue from last issue -

पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह।
वसोष्पते निरमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम्।
अथर्ववेद 1/1/2

Punarehi vachaspate devena manasa saha.
Vasoshpate nirmaya mayyevastu mayi shrutam.
Atharva Veda 1/1/2

Another very desirable characteristic of ideal teacher is his/her selflessness i.e. he/she does not teach students and others with the main aim of earning money in return for teaching. If gaining wealth in return for teaching is the principal aim, then for that teacher teaching becomes a business, and business clearly is not a selfless endeavour. A teacher without having selflessness and high ideals cannot nurture similar ideals and character in his/her pupils. When a teacher's main goal becomes earning wealth, then he/she prefers to teach students who come from families with wealth and prosperity and less inclined to put same amount of energy in teaching those students who are poor or have less resources. In Vedic sanskriti i.e. culture/tradition education was given free, on an equal basis to all who showed commitment to learning. When education is free then there would more likely be selflessness and lack of favoritism or prejudice.

This Veda mantra addresses an acharya i.e. a master teacher as vasopate which means that acharya is home/learned in many areas of knowledge that would be useful to his/her students. While the teacher may have expertise in one particular area of knowledge, nevertheless he/she should have significant command in many common fields of knowledge e.g. language, universe, nature, zoology, botany, chemistry, physics, atmosphere, electricity, air, water, oceans, minerals, space, human body, health, what foods are worth eating and which avoided for good health and long life, common remedies, social organization, town, city and nation's administration, history, past wars, virtuous conduct in life, soul, God, meditation and how to achieve moksha i.e. God realization and the liberation of soul. In this manner, the teacher can help make the students proficient in many areas of knowledge rather than the students's expertise restricted to one area of knowledge only which he/she cannot interconnect with other spheres of knowledge.

Another remarkable message of this mantra is that the topics of knowledge which teachers teach and what students learn from it should be well understood by both of them, so that the knowledge settles in long term memory of both of them. This is only possible if the teacher reviews the topics on multiple occasions and ascertains that the students have deeply learned and memorized the topic by heart. On the other hand, if the teacher does not have command over a study subject and imparts the knowledge superficially by reading books or class-notes to the students, then such knowledge is not of much use because at the time of practical application of the knowledge the student would fail to recall the necessary information.

Finally, this mantra states that a student becomes truly learned only by trying to learn a topic over and over again by him/herself, until he/she has mastery over the subject, and more so if that knowledge is further reinforced by selfless teachers. Such students then can make practical use of their knowledge and learning in a virtuous manner, both for their own personal growth, prosperity and happiness as well as with their high ideals and virtuous deeds promote prosperity and happiness for their families, society, nation and the world. May God bless us that in our nation, the old Vedic educational traditions are re-established, and again people have virtuous character, are healthy, strong and brave, and have financial prosperity. Also, in our nation, people should no longer have selfishness or perform non-virtuous deeds.

To Be Continue....

प्रथम पृष्ठ का शेष

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का .....

उन्हें बताया जा रहा है मांस का भक्षण करो, यह तो तुम्हारें वेदों में भी लिखा हैं। अब घर में न वेद हैं न सत्यार्थ प्रकाश, वह युवा विश्वास कर लेता है और कुमार्ग पर निकल पड़ता हैं। क्योंकि आधुनिक दिखने की होड़ में हम अपने बेटी-बेटे उनके कोमल मन पर वैदिक सभ्यता की छाप छोड़ने में पीछे रह गये और विधर्मी अपना जाल लगातार फैला रहे हैं।

आखिर कितने घरों में सत्य का आइना दिखाने वाली तर्कों की कसोटी पर खरी उतरने वाली विश्व की एक मात्र पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश है? आखिर हम इन छोटी-छोटी अल्प मूल्य की पुस्तकें भी अपने घर क्यों नहीं रख पाए? क्या अगली पीढ़ी को संस्कारवान बनाने का कार्य हमारा नहीं है? मैं उन्हें साधु संत बनाने की नहीं कह रहा, बस इतना कि राष्ट्र, धर्म, समाज और परिवार के प्रति जागरूक होकर एक बेहतर समाज का निर्माण करे।

हालाँकि ऐसा नहीं है सब लोग धर्म से विमुख हैं बस यह सोचते है क्या होगा वेद पढने से, क्या हासिल होगा सत्यार्थ प्रकाश पढने से? ये सब पुरानी बातें हैं, आज आधुनिक जमाना है ये सब चीजें कोई मायने नहीं रखती आदि-आदि सवालों से अपने मन को बहला लेते हैं। आखिर यह बात अगली पीढ़ी को कौन बतायेगा कि हमारा जन्म क्यों हुआ? दो जून का भोजन सैर-सपाटा तो जानवर भी कर लेते हैं या फिर सिर्फ इसलिए कि हम बस मोबाईल पर गेम खेले, अपने परिवार तक सीमित रहें? जिस महान सभ्यता में वेदों की भूमि में हमारा जन्म हुआ, क्या हम पर उसका उत्तरदायित्व नहीं है कि इसका स्वरूप बिना बिगाड़े हम अगली पीढ़ी के हाथ में सौपने का कार्य करें?

सभी जानते हैं हर वर्ष दिल्ली पुस्तक मेले में देश-विदेश से हजारों की संख्या में प्रकाशन, धार्मिक संस्थाएं, पुस्तकों के माध्यम से अपनी संस्कृति का प्रचार करने यहाँ आते हैं, नि:शुल्क कुरान और बाइबिल यहां बांटी जाती हैं। चुपचाप धर्मान्तरण के जाल यहाँ बिछाये जाते हैं। अब तो सब समझ गये होंगे कि आर्य समाज का पुस्तक मेले में जाना कोई व्यापारिक प्रयोजन नहीं है और आपका संकल्प लेना निरर्थक नहीं। बल्कि आर्य समाज अपनी महान वैदिक सभ्यता का पहरेदार बनकर जाता है 50 रुपये की कीमत का सत्यार्थ प्रकाश दानी महानुभाओं के सहयोग से 10 रुपये में उपलब्ध कराया जाता है। क्योंकि स्वामी जी ने कहा था एक धर्म, एक भाव और एक लक्ष्य बनाए बिना भारत का पूर्ण हित और उन्नति असंभव है। ठीक यही बात आज हमारे बच्चों पर भी लागू होती है कि उन्हें अपने धर्म, अपने राष्ट्र अपने परिवार का ज्ञान हुए बिना उनकी भी उन्नति संभव नहीं है। याद रखिये, अपने धर्म, अपनी संस्कृति अपनी भूमि की रक्षा हमें खुद करनी होती है, चाहे हमला हथियारों से हो या विचारों से। यदि हमला हथियारों से है तो हमारी सेना सक्षम हैं उन्हें जवाब देने के लिए किन्तु जब हमला विचारों से होगा तब आप सक्षम हैं, शायद नहीं इसलिए आइये पुस्तक मेले में कम से कम इस बार एक संकल्प लीजिये कि ज्यादा नहीं तो घर में एक सत्यार्थ प्रकाश तो जरुर रखेंगे।

- महामन्त्री

महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार प्रकल्प के अन्तर्गत
देश-विदेश में वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु
प्रचारकों की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की ओर से देश-विदेश में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की शृंखला आरम्भ की जा रही है, जिसके लिए सुयोग्य उम्मीदवारों के आवेदन आमन्त्रित हैं। कुल पद : **भारत हेतु 20** तथा **विदेशों हेतु 5**। इच्छुक अभ्यर्थी के लिए वांछित योग्यताएं निम्न प्रकार हैं -

1. आर्य वीर दल का प्रशिक्षण प्राप्त हो। 2. गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ आधुनिक विषयों की भी शिक्षा प्राप्त की हो। 3 यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ-साथ सभी वैदिक संस्कार सम्पन्न कराने में निपुण हो। 4. आर्यसमाज के प्रचार की हार्दिक इच्छा रखता हो। 5. युवा जिनकी आयु 18 से 30 वर्ष के मध्य हो।

चयनित अभ्यर्थी की प्रथम नियुक्ति भारत के किसी भी राज्य में तथा विशिष्ट अंग्रेजी भाषा ज्ञान और कार्य के अनुभव के उपरान्त भारत से बाहर किसी भी देश में की जाएगी। पूर्ण योग्यता होने की दृष्टि में सीधे विदेशों में नियुक्ति की जा सकती है। सम्मानित मानदेय के साथ-साथ वाहन व्यय, मोबाईल व्यय, स्वास्थ्य बीमा, आवास की सुविधा प्रदान की जाएगी।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य साधने की दृढ़ इच्छा रखने वाले युवा महानुभाव अपना विस्तृत आवेदन पत्र- विश्व में आर्यसमाज के प्रचार की आवश्यकता और उनकी महान इच्छा, पारिवारिक स्थिति एवं परिचय, भाषा ज्ञान, कम्प्यूटर ज्ञान, शैक्षिक योग्यता, पासपोर्ट नं., मोबाईल एवं ईमेल के साथ तत्काल रूप से **'संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति'** के नाम - **'15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें।

- संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति

प्रेरक प्रसंग

तेरी औषधि रह गई!

श्रीयुत पण्डित रामचन्द्रजी देहलवी प्राय: यह कहानी सुनाया करते थे कि एक बार उनके साथ यात्रा करते हुए एक यात्री रेल में मूंगफली खाकर छिलके डिब्बे में ही फैंकता रहा। जब वह रेल से उतरा तो कुली को बुलाकर कहा, 'मेरा सामान उतारो।' सामान उतरवाकर चलने लगा तो देहलवीजी ने कहा, 'अरे बाबूजी! आपकी एक वस्तु तो रह गई।' उसने मुड़कर पूछा, 'क्या?'

पण्डितजी ने मूंगफली के छिलकों की ओर संकेत करके कहा, 'यह।'

बाबूजी लज्जित होकर खिसकने लगे तो देहलवीजी ने कहा, 'मैंने सोचा सम्भवत: इन छिलकों से आपने कोई औषधि बनानी है।''

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आर्यसमाज नगर शाहदरा, दिल्ली का 63वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज नगर शाहदरा दिल्ली का 63वां वार्षिकोत्सव 4 से 6 जनवरी, 2019 को आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर 30 दिसम्बर को प्रभातफेरी का आयोजन किया गया जिसका शुभसारम्भ सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने किया। वार्षिकोत्सव का समापन समारोह 6 जनवरी को होगा।

– ***राजीव कोहली, मन्त्री***

आर्यसमाज डिफेंस कालोनी में राष्ट्रीय संगोष्ठी

आर्यसमाज मन्दिर सी-606, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली में 19 जनवरी को 'दयानन्द के सपनों का आर्य राष्ट्र' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द जी एवं संयोजक डॉ. आनन्द कुमार जी करेंगे। मुख्य वक्ता डॉ. वेद प्रताप वैदिक, डॉ. ज्वलन्त कमार, डॉ. महावरी अग्रवाल, डॉ. राकेश कुमार आर्य, एवं श्रीमती रमा शर्मा होंगे। – ***ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट***

शोक समाचार

श्री ओमबीर आर्य जी को मातृशोक

आर्यसमाज मोतीबाग साउथ, नई दिल्ली के उप प्रधान एवं दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के कोषाध्यक्ष श्री ओमबीर सिंह आर्य जी की पूज्यामाता श्रीमती बाल कुमारी जी का 28 दिसम्बर को 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 29 दिसम्बर को निगम बोध घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 9 जनवरी को उनके आवास एफ-38/10, मोनी बाबा मन्दिर, ब्रह्मपुरी में 4-5 बजे आयोजित होगी।

श्री हरिशचन्द आर्य जी को पत्नी शोक

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी, नई दिल्ली के मन्त्री श्री हरीशचन्द आर्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तला आर्या जी का गुरुवार 27 दिसम्बर को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार शाहपुरा शमशान भूमि तिलक विहार में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शन्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 29 दिसम्बर को सायं 3 बजे आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकास पुरी में सम्पन्न हुई जिसमें निकटवती अनेक आर्यसमाजों के साथ-साथ सभा अधिकारियों ने भी पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री सुभाष गुप्ता जी का निधन

आर्यसमाज बक्शी नगर, जम्मू के पूर्व प्रधान श्री सुभाष गुप्ता जी का दिनांक 31 दिसम्बर को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 1 जनवरी, 2019 को पूर्ण वैदिक रीति के साथ स्थानीय श्मशानघाट पर किया गया।

श्री दीपचन्द आर्य जी का निधन

वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक के अधिष्ठाता तथा आर्ष कन्या गुरुकुल विद्यापीठ, नजीबाबाद के वर्षों तक प्रधान श्री दीपचन्द आर्य जी का 19 दिसम्बर, 2018 को उनकी कर्मभूमि कीरतपुर (बिजनौर) में 91 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनकी स्मृति में 23 दिसम्बर को श्रद्धांजलि सभा एवं शान्ति यज्ञ का आयोजन हुआ।

श्री रामनाथ आहूजा जी का निधन

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी नई दिल्ली के संरक्षक श्री रामनाथ आहूजा जी का 30 दिसम्बर को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 1 जनवरी, 2019 पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 3 जनवरी को आर्यसमाज विकासपुरी बाहरी रिंग रोड के गिरधारीलाल सभागार में सम्पन्न हुई।

श्री बिपिन चोपड़ा जी का निधन

महिला आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी नई दिल्ली की मन्त्राणी श्रीमती किरण चोपड़ा जी के पूज्यपति एवं आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड के सह कोषाध्यक्ष श्री बिपिन चोपड़ा जी का 13 दिसम्बर, 2018 को निधन हो गया।

श्रीमती सुषमा कपूर जी का निधन

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी नई दिल्ली की सभासद श्रीमती सुषमा कपूर जी का दिनांक 28 दिसम्बर, 2018 को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 31 दिसम्बर, 2018 को आर्यसमाज में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

स्वर्ण जयन्ती समारोह एवं विराट वैदिक सम्मेलन

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, शाखा थान्दला, जिला झाबुआ की स्थापा के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 11, 12 13 जनवरी, 2019 को स्वर्ण जयन्ती समारोह एवं विराट वैदिक सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम सेवाश्रम व महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित किया जाएगा। – ***विश्वास सोनी, अध्यक्ष***

गुरुकुल आश्रम आमसेना का 51वां वार्षिकोत्सव

गुरुकुल आश्रम आमसेना का 51वां एवं आदर्श कन्या गुरुकुल आमसेना का 38वां वार्षिकोत्सव 16-17-18 फरवरी को मनाया जाएगा। इस अवसर पर सामवेद पारायण महायज्ञ 7-18 फरवरी तक पं. वीरेन्द्र पाण्डा जी एवं पं. विशिकेसन शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न होगा। 17 फरवरी को गुरुकुल के ब्रह्मचारियों एवं ब्रह्मचारिणियों द्वारा युवा सम्मेलन एवं व्यायाम सम्मेलन का प्रदर्शन किय जाएगा।

– ***स्वामी धर्मानन्द सरस्वती***
संचालक एवं मुख्याधिष्ठाता

आवश्यकता है

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की शिरोमणि संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को अपने विभिन्न प्रकाशकीय कार्यों के लिए एक सुयोग्य सम्पादक की अवश्यकता है, जो सभा के मुख पत्र आर्य सन्देश तथा प्रकाशित होने वाले साहित्य के टाइपिंग, प्रूफरीडिंग, सैटिंग का कार्य निपुणता के साथ कर सके। आर्यसमाज एवं वैदिक परम्पराओं से ओत-प्रोत अभ्यर्थियों को प्राथमिकता दी जाएगी। इच्छुक अभ्यर्थी अपना बायोडाटो ***arya sabha@yahoo.com*** पर भेजें।

– *महामन्त्री*

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज IAS परीक्षा - 2019

भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी ध्यान दें

आर्यसमाज के शिक्षण संस्थानों/गुरुकुलों/सेवाकेन्द्रों/बालवाड़ियों, डी.ए.वी. संस्थानों/ विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ऐसे प्रतिभावान छात्र/छात्राएं जो वर्ष 2019 में आयोजित होने वाली सिविल सर्विसिज एग्जामिनेशन में भाग लेना चाहते हैं, अर्थित एवं मूलभूत आवश्यकताओ के अभाव के कारणों से परीक्षा तैयारियां नहीं कर पा रहे हैं उन सबके लिए आर्यसमाज की ओर से स्वर्णिम अवसर।

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की ओर से राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, आर्य शिक्षण संस्थानों में शिक्षा प्राप्त सुयोग्य पात्रों को आर्थिक सहयोग एवं परीक्षा तैयारियों के लिए प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करने की घोषणा की जाती है। योजना का लाभ प्राप्त करने के इच्छुक महानुभावों को एक लिखित/मौखिक एवं बौद्धिक परीक्षा पास करनी होगी। सफल परीक्षार्थियों में से प्रथम 40 अभ्यर्थियों को दिल्ली में आमन्त्रित करके, भोजन, आवास एवं तत्सम्बन्धी समस्त सुविधाएं निशुल्क प्रदान की जाएंगी तथा प्रशिक्षण की तैयारियां कराई जाएंगी। इस योजना का लाभ उठाने के इच्छुक विद्यार्थी/परीक्षार्थी अपने शैक्षिक प्रमाण पत्रों, वित्तीय स्थिति के विवरण तथा आवश्यक कागजातों की प्रति के साथ अपना आवेदन पत्र संस्थान की ईमेल आई.डी. dss.pratibha@gmail. com पर ईमेल करें। अधिक जानकारी के लिए मो. 9540002856 पर सम्पर्क करें। परीक्षा की तिथि शीघ्र ही घोषित की जाएगी। – ***व्यवस्थापक***

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

वैदिक शगुन लिफाफे
महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

सोमवार 31 दिसम्बर, 2018 से रविवार 6 जनवरी, 2019
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 3-4 जनवरी, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 2 जनवरी, 2019

खुशखबरी! खुशखबरी!! खुशखबरी!!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
वर्ष 2019 का
कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339

प्रतिष्ठा में,

ओ३म्
thearyasamaj.org

एक करोड़ तेईस लाख
से अधिक लोगों ने अब तक देखा
आर्यसमाज YouTube चैनल

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और
अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।
यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना
चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।
यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र
सत्य की राह Vedic Path to Absolute Truth
मात्र 30/- रु. हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. नं. 9540040339

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित
स्वाध्याय प्रेमियों के लिए
365 वेद मन्त्रों का अभूतपूर्व संग्रह : प्रतिदिन एक मन्त्र का हृदय से पाठ करें
वैदिक विनय
20% छूट के साथ मात्र
120/- रुपये में

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह